आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

प्रा.बहिरम देवेंद्र (हिंदी) डॉ. योगिता रांधवणे (मराठी)

सहायक संपादक

प्रा.नारायण हिरडे डॉ. राजेंद्र ठाकरे

डॉ. नीतिन थोरात प्रा. बापु देवकर

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vaidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

60	कबीर और संत तुकाराम के नारी संबंधी विचार **डॉ. भास्कर उमराव भवर**	318
61	राष्ट्रीय संत तुकडोजी महान समाजसुधारक **प्रा. हिरडे नारायण एन.**	322
62	समन्वयवादी संत रविदास **डॉ. सुभाव नामदेव जाधव**	326
63	संत कबीर एवं संत तुकाराम के विचारों की प्रासंगिकता **डॉ. नानासाहेब जावळे**	328
64	'संत कबीरदास' का सामाजिक प्रदेय– **प्रा. शिंदे नवनाथ सर्जेराव,**	331
65	संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता **डॉ.गोरखनाथ किर्दत**	335
66	समाज के नवनिर्माण में संत साहित्य का योगदान **डॉ.नवनाथ गाड़ेकर**	338
67	हिंदी संत साहित्य मे भक्ति का स्वरुप **प्रा. नयन भादुले -राजमाने**	341
68	संत कबीर के विचारो की प्रासंगिकता **प्रा. प्रदिप बबनराव पंडित**	344
69	संत साहित्य में सामाजिक चेतना **राजेश सिंह**	347
70	संत–साहित्य की प्रासंगिकता **डॉ राकेश कुमार सिंह**	351
71	हिंदी संत साहित्य की उपादेयता **रवि कुमार,**	356
72	समकालीन हिंदी कविता: स्वरूप एवं संकल्पना **प्रा.रेश्मा चंद्रभान सोनवणे**	365
73	**संत साहित्य की प्रासंगिकता का प्रश्न** **ऋषिकेश कुमार**	370
74	मध्ययुगीन संत साहित्य की प्रासंगिकता **शेख रुबीना**	373
75	संत साहित्य की प्रासंगिकता (संत कबीर के संदर्भ में) **सचिन मदन जाधव**	378
76	संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता. **प्रा. डॉ. संतोष येरावार**	381
77	"भारतीय संतो का साहित्यिक योगदान" **सरपे सुप्रिया भारत**	384
78	'मराठी संत ज्ञानेश्वर और नामदेव की सामाजिक भूमिका' **डॉ.शेख शहेनाज अहेमद**	388
79	कबीर की प्रासंगिकता **प्रा. शितोळे नामदेव ज्ञानदेव**	391

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/AJ 58/1999 Pimpalgaon Pisa. Tal. Shrigonda. Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

80

कबीर की प्रासंगिकता

प्रा. शितोळे नामदेव ज्ञानदेव
हिंदी विभाग
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय,
पिंपळगाव पिसा, तह-श्रीगोंदा
जिला-अहमदनगर

कबीर भक्त और कवि बाद में है,समाजसुधारक पहले है। कोई भी समाजसुधारक अपने कार्य की छाप आगे आनेवाले सदीयों तक रखता है। कबीर तो एक असामान्य समाजसुधारक थे वो तो कभी भी अप्रासंगिक नही हो सकते। उन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में समाज सुधार का स्तुत्य प्रयास किया है। कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त था। छुआ छुत, अन्ध विश्वास, रुढिवादिता, मिथ्याचार, पाखण्ड का बोलबाला और हिंदु-मुस्लिमोंका आपस में झगडना आदि। आज भी हमारे समाज में हो रहा है। जो ६०० साल पहले भारतीय समाज में हो रहा था।

भक्तियुगीन कालखंड में कबीर को जो लोकप्रियता प्राप्त हुई उसका मूल कारण यह है की, उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति का खरापन दिखाई देता है। उन्हे जो उचित लगा उसका खुलकर समर्थन किया और जो अनुचित लगा उसका भी खुलकर विरोध किया। कबीरदास जी का यही स्वभाव लोगोंको पसंद आया। उन्होने मानव के जिन आदर्शो का स्वप्न देखा है, उन्हे प्राप्त करने में अभि मनुष्य जाति को न जाने कितने युग लग जायेंगे।

कबीर का जन्म भले ही आज से लगभग ६०० वर्ष पूर्व हुआ हो, किंतु उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक है। यही कहना अधिक उपयुक्त होगा कि आज उनकी शिक्षा ओं की आवश्यकता तत्कालीन युग की अपेक्षा अधिक है। तत्कालिन कालखंड में हिंन्दू-मुस्लिम जनता आपस में मंदिर-मस्जिद प्रश्न पर संघर्षरत रहती थी। धर्म के ठेकेदार धार्मिक उन्माद के चुल्हे स्वार्थ की रोटिया सेंकते थे, वैसा ही वर्तमान समय में राजनैतिक लोग भी अपने स्वार्थ के लिए लोगों को धर्म, जात, संप्रदाय आदि में बॉंट रहे है।

वर्तमान समय में सिर्फ मंदिर-मस्जिद के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे नही हो रहे है।तो लोग जति के नाम पर भी दंगे-फसाद हो रहे है। महाराष्ट्र में कोरेगाव भिमा नामक गाव में जो दंगे फसाद हुए उसके पिछे भी ऐसी शक्तियाँ है जो अपना स्वार्थ सिध्द करने के लिए दो जातियों को आपस में लढा रहे है। कबीर ने इस जााति-पाति पर कडा प्रहार किया है। धर्म या जति के आधार पर भेदभाव करना उन्हे मान्य नही है।

'जो तू बामन बामनि जाया, आन बाट तै कांहे न आया।'

कबीर ने धर्म जाति या कुलगत उच्चता के बजाय कर्म तथा विचारों की उच्चता को प्रतिष्ठा दी है। साथ ही उन्होने एक आदर्श समाज का सपना देखा जो वर्णभेद से मुक्त है।

समाज में पाखण्ड आज भी व्याप्त है, दुराचरण की मात्रा घटने के स्थान पर बढ रही है। छल-कपट, हिंसा, अज्ञान और विद्वेष ने समाज को खोकला कर दिया है। कबीर ने पाखण्ड, बाह्याचार, अंध-विश्वास एवं

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

रुढियों पर आघात किया है | अंधविश्वास का उपहास कर ठीक निशाने पर चोट पहुंचाते है | मूर्तीपूजा, तीर्थयात्रा अवतार वाद एंवं कर्मकांडों का विरोध किया तथा ईश्वर और व्यक्ति के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार किया है | कबीर हर उस रुढी परंपरा का विरोध करते जो मानव-मानव के बीच भेद उत्पन्न करते है जो वर्तमान युग में मानव भौतिक सुख-सुविधांओं के पिछे भागता है, और भ्रष्टाचार, मिलावट खोरी करता है उन लोगों के लिए कबीर का यह दोहा प्रासंगिक है |

'साई इतना दिजीए, जामे कुटुम्ब समाया'
मै भी भूखा न रहू, साधु ना भूखा जाए ' |

धार्मिक आंडम्बरोंको विरोध करते हुए हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मो की कुप्रथाओं पर तिखा प्रहार किया है | हिंदूओं की मूर्तीपूजा का विरोध करते हुए वे कहते है |

'पत्थर पूजै हरि मिले, तो मै पुजू पहाड'

तो मुस्लीमों के मस्जिद में होनेवाले नमाज के वक्त लोगों को बुलाने वाले मुल्ला को भी खरी-खोटी सुनाते है |

'' काकर पत्थर जोरी के मस्जीद लई बनाय |
ता चढी मुल्ला बाग दे क्या बहग हुआ खुदाय |

मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए कबीरदास जी ने धैर्य, सहिष्णुता, कर्मयोग, गुरु का सम्मान, प्रेम, मानवता, आत्मा की पवित्रता, दीन-दुखियों की सेवा, नैतिकता के पालन को मानवीय माना है | वे सच्चे अर्थो मे कर्मयोगी थे | समाज को सचेत करते हुए कहते है की निर्बल को मत सताओं नही तो उनकी हाय सब कुछ नष्ट कर देगी-

'निर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय |
मई खाल की श्वांस सौं लौट भसम हो जाए |

भक्तियुगीन कालखण्ड में कबीर ने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली को पोथियों से बाहर लाकर प्रेम तथा यथार्थ पर आधारीत करने का प्रयास किया है | सही शिक्षा क्या है | यह बतलाते हुए वे कहते है |

'पोथी पढी-पढी-जग मुआ पंडित भया न कोय |
ढाई आखर प्रेम का, पढे सौं पंडित होय |

कबीर जाति प्रथा को स्विकार नही करते थे, उनका मानना है कि साधु यानि गुणी लोगों की जाति हमें पूछनी नही चाहिए उनके केवल गुण देखने चाहिए | आज जातियवाद का जहर समाज में फैल रहा है विशेषत: आरक्षण का उन लोगों को कबीर का यह दोहा करारा जवाब है |

'जाति ना पूछौं साधू की, पूछ लिजै ज्ञान,
मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान '

कबीर ने भक्ति का भी जो पथ दिखलाया उसके ऊपर ध्यान दे तो वो भी प्रासंगिक ही है | उन्होंने किसी विशेष सम्प्रदाय का पूजा पध्दति का प्रचार नही किया | इसी कारण कबीर ने परमेश्वर के लिए राम, कृष्ण, केशव, करीम, अल्लाह, खुदा, रहमान, गोविन्द, माधव आदि सभी प्रचलित नामों को ग्रहण किया और शुध्द आचरण तथा निरभिमानता पर आधारित भक्ति का संदेश दिया | विज्ञान एंव बौध्दिकता के आतिवाद से पीडित एंव अतृप्त मानवता को कबीर का यह भक्ती संदेश शांती एंव तृप्ति प्रदान कर सकता है |

छल-कपट, असत्य, हिंसा, अज्ञान, भ्रम आदि का डटकर विरोध करनेवालो कबीर ने सत्य, अहिंसा, ज्ञान एंव विवेक का मार्ग हमें दिखाया है | अगर मानव जाति से पाखण्ड, अंध विश्वास, रुढिया आदि आज भी मौजुद है तो कबीर अप्रासंगिक नही हो सकते | हिंसा, असत्य, अज्ञान एवं भ्रम में पडी मानव जाति आज भी

Savitribai College of Arts ID. NO. PU/AN/AJ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

भटक रही है | इसमें से बाहर निकालने का रास्ता कबीर जैसे समाज सुधारक ने ६०० साल पहले ही हमें बता दिया है |

धर्म के नाम हिंसा का कबीर विरोध करते है | हिन्दूओं में शाक्तो और मुसलमानों में कुर्बानी देनेवालो का उन्होंने निर्भिकता से विरोध किया है |

मुसलमानों को फटकारते हुए कहते है,

'दिन में रोजा रखत है राति हनत है गाय |
यह तो खुन वह बंदिगी कैसे खुसी खुदाय' |

तो गाय को कबीर माता मानते है जो हमें दूध पिलाती है, उसका वध करना माता का वध करने जैसा है-

'जाको दूध धाई करि पीजे |
ता माता को वध क्यू कीजै | '

कबीर नैतिक मूल्यों के पक्षधर थे |जनता के सच्चे पथ प्रदर्शक थे | आचरण की पवित्रता का जो मार्ग उन्होंने बताया है उस पर पहले वे स्वय चलते थे |साथ ही उन्होंने व्यक्ति के सुधार पर इसलिए बल दिया क्योंकि उन्हे मालूम है कि व्यक्तियो से ही समाज बनता है, यदि किसी समाज में अच्छे आचरण वाले व्यक्ति अधिक होंगे तो समाज स्वयमेव सुधर जायेगा |

सामान्यतः समय बितने पर अखबार की खबरें व्यर्थ हो जाती है | उसे न तो कोई दोबारा पढता है और न उसकी कोई प्रासंगिक रहती है | लेकिन साहित्यीक रचनाएँ कभी अप्रासंगिक नही होती | हम उन्हे जितनी बार पढते है, उनमें से उतना ही नविन अर्थबोध है |इसीलिए साहित्य सदैव प्रासंगिक रहता है | वह सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वजनिक है इसीलिए किसी एक देश के कवि या साहित्यकार केवल उस देश के लोगों को ही प्रिय नहीं होते अपितु वे प्रत्येक सदस्य को प्रभावित करते है | साहित्यकार देशकाल की सीमा मे बंधा नहीं होता इसलिए वह प्रत्येक रचना को माध्यम से आनन्दित करता है | कबीर भी एक ऐसे ही सार्वकालिक कवी है जिनकी रचनाएँ न कभी अप्रासंगिक थी, न है और न होंगी |

संदर्भग्रंथ

१. कबीर ग्रंथावली-संपादक-डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.
२. कबीर के कुछ और आलोचक-२, संपादक -डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन.
३. कबीर वाणीसंग्रह-संपादक-पारसनाथ तिवारी.
४. कबीर ग्रंथावली-संपादक-माताप्रसाद गुप्त.
५. भारतीय संस्कृति एवं धर्म-ब्रजराज स्वरुप.
६. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.नगेंद्र.

Savitribai College of Arts ★ Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar ★ ID. No. PU/AN/A/ 58/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar